दलित स्त्री विमर्श आधुनिक उपन्यासों की दृष्टि से

रेखा रानी(शोधार्थी हिन्दी)& डॉ. अनिल कुमार पाण्डेय(निर्देशक)
लवली प्रोफेशनल विश्वविद्यालय, फगवाड़ा(पंजाब)

Received: February 04, 2019 Accepted: March 11, 2019

ABSTRACT: *साहित्य मनुष्य के जीवन का दर्पण तथा मनुष्य की चितवृतियों का संचित प्रतिबिम्ब माना जाता है ।साहित्य को समाज का दर्पण क्हा जाता है कयोंकि साहित्यकार जो कुछ समाज में देखता है उसको साहित्य के माध्यम से अभिव्यकत करता है । साहित्य के संबंध में परिभाषा देते हुए महीप सिंह लिखते है कि साहित्य अपने समय के सामजिक यथार्थ को हमारे सामने प्रस्तुत करता है और उसका असली चेहरा उघाड़कर दिखाता है ।....साहित्य का दायित्व केवल इतना ही नहीं है कि वह हमें 'क्या हो गए है से परिचित कराए बल्कि आज हम या हमारा समाज जो कुछ भी है,उसके लिए हम कौन थे ' का जानना आवश्यक है और उसी के साथ 'क्या होंगे' पर गंभीर विचार विमर्श भी जरूरी है । साहित्य समाज को उसके यथार्थ को चाहे वह कितना ही गलीज और वीभत्स क्यों न हो से परिचित करवाता है ।साथ ही समसामयिक यथार्थ का निर्माण करने वाली अतीत की शक्तियों का आकलन करते हुए भविष्य के लिए हमारा मार्ग दर्शन करता है ।(महीप सिंह 5) इस प्रकार साहित्यकार समाज का अंग होने के कारण समाज की विसंगतियों से प्रभावित होता है और वह समाज में व्याप्त समस्याओं को अपनी लेखनी के माध्यम से उजागर करता है । साहित्य में गद्य विधाओं में उपन्यास का महत्वपूर्ण स्थान है क्योंकि यह मनुष्य के जीवन तथा समाज के सूक्षम से सूक्षम पक्ष को प्रस्तुत करने में सक्षम होता है । स्त्री विमर्श की बात की जाए तो स्वतंत्रता के बाद नारी आंदोलन विभिन्न उद्देश्यों को लेकर हमारे सामने आता है जिसमें महिलाओं ने विभिन्न स्तर पर सक्रिय योगदान दिया । सम्पूर्ण विश्व में बढती हुई असमानता, भेदभाव, गरीबी तथा हिंसात्मक टकरावों के संकटों ने नारी आंदोलन को बहुआयामी स्वरूप प्रदान किया है । भारतीय महिला आंदोलन में दलित, कामकाजी, मजदूर, निम्न, मध्य एवं उच्च वर्गीय सभी का योगदान है । वर्तमान समय में महिलाओं ने एक दूसरे की परिस्थितियों, समस्याओं,संघर्षों एवं प्राथमिकता को समझने की चुनौती स्वीकार की है ।*

Key Words: ***दलित,उपन्यास,नारी,आयाम।***

विषय विश्लेषण

वर्तमान भारतीय नारी विमर्श के अनेक आयाम हैं और इसका प्रमुख उद्देश्य स्त्री सशक्तीकरण रहा है । आधुनिक साहित्य में समाज और साहित्यकारों का दृष्टिकोण बदला है । समाज में नारी को उचित सम्मान एवं स्थान देने की वकालत की जाने लगी है लेकिन आज भी समाज ने नारी की स्थिति पूरी तरह से नहीं बदली। 'अकसर पत्रिका' में सुधा अरोड़ा का यह कथन इस बात की पुष्टि करता है कि "निश्चय ही हम 21 वीं सदी में भी एक 'बंद समाज' के घेरे को तोड़ नहीं पाए हैं। स्त्री के प्रति हमारा नजरियां आज भी बहूत मानवीय नहीं बना है ।" (सुधा अरोड़ा 31) अर्थात आज हम 21 वीं सदी की दहलीज पर खड़े है आज युग बदल गया है । औरते मर्दों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर हर क्षेत्र में आगे आ रही है परन्तु दलित समाज की औरतों की स्थिति में आज भी परिवर्तन नहीं हुआ है । प्रस्तुत शोध पत्र में दलित स्त्री के जीवन से जुड़े विभिन्न पक्षों को उपन्यासों के माध्यम से प्रस्तुत किया है ।

भारत एक कृषि प्रधान देश है और यहाँ के समाज में ग्रामीण संस्कृति का अपना एक अलग महत्व है । हिन्दी के अनेक उपन्यासों में ग्रामीण परिवेश का विस्तार से चित्रण किया गया है । नारी समाज पर ग्रामीण परिवेश के अंतर्गत आने वाली समस्याओं का चित्रण आलोच्य उपन्यासों में किया गया है । प्रस्तुत उपन्यासों में ग्रामीण दलित स्त्री के जीवन से जुड़ी अनेक समस्याओं को प्रस्तुत किया गया है । जिसमें अधिकांश समस्याएँ विवाह से जुड़ी है । 'मगहर की सुबह ' उपन्यास में उपन्यासकार 'वंदना देव' शुक्ल ने आर्थिक समस्यां से ग्रस्त दलित समाज की कम पढ़ी लिखी और अशिक्षित औरतो की स्थिति को दलित युवती मैना के माध्यम से प्रस्तुत किया है । जिसमें निर्धनता के कारण बदतर पारिवारिक हालातों के चलते छोटी आयु में मैना का विवाह मंदबुद्धि राजों के साथ कर दिया जाता है । उदाहर्ण को लिए.....

> तेरे राजो का रिस्ता पक्का करके आया हूँ लड़की सात पास है, चौदह बरस की है । कराहल के पास गाँव की रहने वाली है ।....पाँच मोड़िया है....ये सबसे बड़ी है । बाप गरीब है । हमने कह दी कि हमई उठाएंगे दोनो लंघ का खर्च....मोड़ी का बाप राजी हो गया । (वंदना देव शुक्ल 22)

इस प्रकार ग्रामीण क्षेत्रों में निर्धनता के कारण दलित समाज की लड़कियों का विवाह के नाम पर शोषण किया जाता है और वह चाह कर भी आवाज नहीं उठा पाती। वास्तव में नारी शोषण समाज की प्राचीनत्म समस्याओं में से एक है।

भारत एक वर्ण और वर्ग प्रधान देश है। अतः सवर्णों तथा उच्च वर्ग द्वारा निम्न या अछूतों का शोषण आरंभ से होता रहा है। निम्न वर्ग की औरतों का दोहरा शोषण होता है। सवर्णों द्वारा उन पर अत्याचार करके उनकी दशा को दयनीय बना रखा है। 'विपिन बिहारी' के उपन्यास 'हमलावर' में जगदीश बाबू अपने बंधुआ मजदूर की पत्नी को काम के लिए बुलाने जाते है काम अर्थात खेतों में मजदूरी के साथ जगदीश बाबू को भी खुश रखना है।

उदाहरण के लिए...

> काम पर बसिआ नहीं आई तो जगदीश बाबू स्वयं बुलाने गए थे उसे, "कुछ भी कर लो तुम, तुमहें काम पर आना ही पड़ेगा। और देख काम से तुम्हारा ही भला होगा। मैं खुश रहूँगा तो दुनियां खुश रहेगी तुम पर, यही मालकों का दस्तूर है। कहीं भी कमाने जाओं,तुम्हें कोई संसत में नहीं रहने देगा। यदि कोई ऐसा मिलता है तो रामप्रिता चला जाए.....राम पिरता को तो ढो ही रहा हूँ तुम्हे ढोऊगां तो मर नहीं जाऊगां "।(विपिन बिहारी 21)

इस वर्ग की नारियों का शारीरिक शोषण तो बहुत सामान्य घटना के रुप में दिखाई देता है। उच्च वर्ग के पुरूषों को अपना शरीर समर्पित कर देना इस वर्ग की नारियों के लिए एक नियति के रूप में चित्रित किया गया है। दलित विमर्श के साहित्याकर इस वास्तविकता से भली भांती परिचित दिखाई देतें है कि भारतीय समाज उसमे भी दलित समाज का उत्थान नारी दी दशा को सुधारे बिना संभव नहीं। उन्हौने इसी परिपेक्ष्य में भारतीय समाज के निम्न वर्ग की नारी की समस्याओं को अपने उपन्यासों के माध्यम से वाणी दी है। उपन्यासकार 'शिवमूर्ति' ने तर्पण उपन्यास में ग्रामीण क्षेत्र की युवतिओं के शारीरिक शोषण को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। उदाहरण के लिए..

> रजपतिया की माँ ने ऐसी बोली मारी है कि आज क राज विक्म को नींद नहीं आएगी। अपनी बुआ का आंसुओं में डूबा चेहरा उसकी आंखों में बस गया है। तब वह नौवी में पढ़ता था। उसकी बुआ का गौना हौने वाला था दस बारह दिन बाकी थे विदाई के, जब अचानक दिन दिहाड़े सिवार पर घास छीलती उसकी बुआ को नत्थू सिंह के दोनों बेटे घसीट कर गन्ने के खेत में.....आज भी सोचकर कलेजे में हूल- सा उठता है। नत्थू सिंह के दोनों बेटों ने गाँव में घूम कर धमकाया था-थाना पुलिस जाने के लिए कोई टोले से निकला तो उसका हाथ पैर तोड़ दिया जाएगा....। (शिवमुक्ति 19)

इस प्रकार ग्रामीण क्षेत्र की दलित महिलाओं का शारीरिक शोषण किया जाता है और वह चाह कर भी कुछ नहीं कर पाती है। 'विपिन बिहारी' ने उपन्यास 'हमलावर' में इसी प्रकार की समस्या को प्रस्तुत किया है

> फूकन की बेटी सुनरी चूल्हा चौका के बाद फरागत होने गई थी फल्गू की तरफ। आइंदा औरते झुंड बनाकर जाती थी फरागत होने के लिए। लेकिन आज ऐसे लगता था कि सुनरी थोड़ा देर से निकली थी फरागत होने के लिए।चढ़ती उमर गोरा रंग उफान लिए छातियाँ.....उस तरफ भागे। कुछ लोग दोड़े फल्गू के किनारे भूतहा इनार कू तरफ। उसमें झगड़ डाल रहे थे।इंजोरिया राज अचानक ही भूतहा हो गई थी। चिल्ला रहे थे लोग सुनरी...सुनरी। आखिर में मिली लेकिन ऐसी हालत में की देह पर कोई वस्त्र नहीं। कराह रही थी वह। मदन ने अपना अंगोछा डाल दिया था उस पर..(विपिन बिहारी 138)

अर्थात दलित औरतों के साथ जबरदस्ती कर उन्हें मरने के लिए छोड़ दिया जाता है और दलित परिवारों के लोग कुछ भी नहीं कर पाते। वास्तव में देखा जाए तो निम्न वर्गीय नारी को मध्यवर्गीय स्त्रियों की अपेक्षा अधिक शौर्य और साहस की भावना विध्यमान होती है। वह आर्थिक तंगी के चलते अपने परिवार के साथ खेत खलियानों में कार्य करने से लेकर मजदूरी तक करती है और मुसीबत के समय दुशमन के साथ लोहा लेने से भी पीछे नहीं हटती क्योंकि यह घटनाएँ तो उसकी रोजमर्रा की जिन्दगी का हिस्सा बन चुके है। 'शिवमुक्ति' के 'तर्पण' उपन्यास में 'दलित युवती रजपतिया' को साहसी दिखाया गया है। उपन्यास में जब धरमू पंडित का लड़का उसके साथ बलात्कार का प्रयास करता है तो वह उस का विरोध करती है और धक्का देकर गिरा देती है और सहायता के लिए आवाज लगाती है। जैसेः-

> चन्दर की आँखों में शैतान उतर आया..वह शैतानी हँसी हँसता है- "आज आई है पकड़ में.....खबरदार? खबरदार बोलना कब सीख गई इन नान्हों की छोकरियाँ ? इतनी हिम्मत। और रजपतियाँ का कोंछ खुलने से पहले उसका हाथ बदमाशी के लिए चल गया। इस चले हुए हाथ के वह बीच झटक कर गरजी "हरामजादे" और पीछे हटने लगी।झटके हुए हाथ की अंगूँठी की नोक आंचल से अरझी तो आंचल फट गया। वह आंचल संभालती इसके पहले ही चन्दर ने लपककर उसे कन्धों से पकड़ा और पैर में लंगी मार दिया। वह संभल नहीं पाई और गिर गई और ऊपर हो आए चंदर के बाल पकड़ कर खीचतीं हुई चिल्लाई " अरे माई रे। गोहार लागा। धरमुआ का पुतवा उधिरान बा रे।"(शिव मुक्ति 10)

अर्थात दलित स्त्री रजपतियाँ उस पर हुए बलात्कार के प्रयास को यदि असफल करने में सफल होती है तो सिर्फ अपनी हिम्मत के कारण। ग्रामीण अशिक्षित औरतों के साथ शहरी दलित स्त्री को भी इसी प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। कम पढ़े लिखे होने के कारण कोई ढंग का कार्य करने में असमर्थ होने के कारण दलित स्त्रियों को घरो में काम काज करने कमाई करना ही विकल्प रह जाता है परन्तु वहाँ पर भी इनको शोषण और अत्याचार का सामना करना पड़ता है। दलित स्त्री से शारीरिक शोषण के उदाहरण को 'रूप सिंह चन्देल' ने अपने उपन्यास 'दगैल' में नवीन तथा बीना के माध्यम से प्रस्तुत किया है। जब नवीन बीना पर बलातकार का असफल प्रयास करता है और बीना उसका विरोध करती है। उदाहरण के लिए..

> पचीस छब्बीस साल की वह युवती उसके निवास से डेढ किलोमीटर दूर बाल्मीकि बस्ती में रहती थी। उसकी जाति के विषय में सुनकर ब्राह्मणत्व जाग उठा था,लेकिन लड़की की साफ – सफाई, सुन्दरता और बातचीत के ढंग से उसने उस विचार को एक ओर झटक दिया।...शहर में रहकर गाँव की दकियानूसी सोच...."बाबू क्या बात है....कुछ नहीं ...तुम जो चाहोगी दूँगा..और झपट कर बीना को पकड़ लिया.....नवीन के पकड़ते ही उसने गीला पोचा नवीन के चहरे पर छपाक के साथ पटक दिया .।.....उसने दोनों हाथों से बीना को दबोच लिया और दोनों हाथों से घसीटने लगा। बीना नवीन से कम ताकतवर नहीं थी उसने बैड से पैर अड़ा दिया और चीखते हुए "..बचाओ ....मेरी इज्जत..बचाऔ...बचाऔ।" की आवाज के साथ अपने को छुड़ाने के लिए सारी ताकत झोंक दी.....।(रूप सिंह चन्देल 39)

रूप सिंह चन्देल ने घरों में काम काज करने वाली दलित स्त्री के शोषण का एक और रूप प्रस्तुत किया है जब दलित युवती सुनीता को आर्थिक तंगी के चलते कामकाजी दमपति विक्रांत और वनीता की नवजात बच्ची को संभालने के लिए काम के लिए रखा जाता है। आर्थिक तंगी के कारण सुनीता की माँ विक्रांत से सुनीता के आठ पास होने की बात कर कर उसे किसी संस्था में कार्य दिलवाने के लिए निवेदन करती है और सुनीता विक्रांत के घर में आया के तौर पर कार्य करती है..उदाहरण के लिए..

> सुनीता बीस साल की सुन्दर युवती थी। पाँच फीट दो इन्च लम्बी..भरी देहयष्टि,चौड़ा गोल चेहरा बड़ी बड़ी आँखे और गेहुआ रंग। उसने तत्काल हाँ कर दी....उसके बाद भी सुनीता तीन साल तक दूसरे घरों में काम करती रही थी..लेकिन बढ़ती जवानी के साथ लोगों की नजरें उसके शरीर का और अधिक निरीक्षण करने लगी। एक दिन जब एक घर के लाडले ने ,जो उसी की उम्र का था और बाहरवीं में पढ़ रहा था उसे गंदा प्रस्ताव कर दिया। जिसके बदले पाँच से देने की बात कही..उसके अगले दिन ही सुनीता ने काम छोड़ दिया।(रूप सिंह चन्देल..99,100)

सुनीता नहीं जानती थी कि जिस शोषण से बह बचने का प्रयास कर रही है शारीरिक शोषण करने वाले ये भेड़िए समाज में कदम कदम पर उसे मिलेगें और जिस शारीरिक शोषण से वह बचती आ रही थी वह अब नवीन उसके साथ अपने कालेज में नौकरी दिलाने का झांसा देकर करता है। उदाहरण के लिए..

> "तुम कितनी अच्छी हो सुनी" और विक्रांत अपने पर नियंत्रण खो बैठा। नीचे का दरवाजा वह मजबूती से बंद करके आया था। सुनीता ने विरोध किया। लेकिन उसका विरोध शकित हीन था। विक्रांत ने उसे गोद में उठा लिया और बैड पर ले गया। सुनीता के विरोध की सारी कोशिशे बेकार हुई। सुनीता ने कभी कल्पना भी नहीं की थी जो कुछ देर पहले घटित हो चुका था। वह बिलख कर रोती रही। विक्रांत ने उसे गोद में उठा लिया और उसके गाल चूमते हुए बोला "तुम्हें दुखी नहीं होना चाहिए सुनी। जीवन में यह भी उतना ही जरूरी है...जितना भोजन...तुम छोटी नहीं हो....समझदार हो...मैं तुमहारी नौकरी के लिए दिन- रात एक किए हुए हूँ.....दुनियाँ का नियम है...इस हाथ से लेना उस हाथ से देना। इसे सहज रूप में लो....जिन्दगी रोने के लिए नहीं है। प्रसन्न भाव से आनंद लूटने के लिए है। (रूप सिंह चन्देल 111)

'कैलाश चन्द्र चौहान' के उपन्यास विद्रोह में दलित वर्ग की पढ़ी लिखी युवती पूजा जो कि बी.ए पास है की शादी महेंन्द्र नाम के एक कलर्क के साथ कर दी जाती है परन्तु शादी के बाद पूजा पारिवारिक हिंसा का शिकार होती है और उसका शोषण करने वाला कोई और नहीं बल्कि उसका पति और सास है। जैसेः

> सास की बात ने आग में घी का काम किया। महेन्द्र सिंह के अंदर से न जाने कब तक का गुस्सा निकल पड़ा। चल पड़े पूजा पर लात घूंसे। पूजा ने उसका हाथ पकड़ना चाहा तो और मारे..जब बात कुछ ज्यादा ही बढ़ गई तो सास ने महेन्द्र सिंह को रोका..(विद्रोह 105)

उपसंहार

इस प्रकार निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि 21 वीं सदी के दलित विमर्श के उपन्यासों में निम्न वर्गीय ग्रामीण तथा शहरी औरतों के जीवन का वास्तविक चित्र प्रस्तुत करते हुए यह दिखाने का प्रयास किया है कि निम्नजाति की ग्रामीण तथा शहरी नारियाँ अपने आस्तित्व हेतु विभिन्न स्वरूपों में पुरूष की अधीनता से बाहर आने को छटपटाती और लड़ती-झगड़ती नज़र

आती है परन्तु चाह कर भी शोषण के इस मुक्ति चक्र ले बाहर नहीं निकल पाती ....लेकिन वे इसके लिए लगातार प्रयास रत है।

संदर्भ पुस्तक सूची

1. अरोड़ा,सुधा.(लेख) भारतीय समाज क्या स्त्री की देह से मुक्ति बदलेगा.अकसर पत्रिका. जुलाई सितम्बर. 2004.
2. चन्देल, रूप सिंह.दगैल. भावना प्रकाशन, 2019.
3. चौहान, कैलाश चन्द्र.विद्रोह. सम्यक प्रकाशन, 2017.
4. बिहारी, विपीन. हमलावर. श्री नटराज प्रकाशन, 2014.
5. मूर्ति, शिव. तर्पण. राज कमल प्रकाशन, 2004.
6. सिंह ,महीप. साहित्य और सामाजिक उत्तरदायित्व.दैनिक जागरण.अक्तूबर 2000.
7. शुक्ल, वंदना देव. मगहर की सुबह . आधार प्रकाशन, 2014.